

॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ द्वारं उत्तरकुहणमिति शेषः अगम्यमिति छेदः ॥ १७ ॥ तेन द्वारेण ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

लोहितांबरसंवीतो लोहितस्त्रिभूषणः ॥ लोहिताश्वो महाबाहुर्हिरण्यकवचः प्रभुः ॥ १३ ॥ रथमादित्यसंकाशमास्थितः कनकप्रभं ॥ तंदृष्ट्वा दैत्यसेना साव्य
द्रवत्सहस्रारणे ॥ १४ ॥ सचापितां प्रज्वलितां महिषस्य विदारिणीं ॥ मुमोच शक्तिराजेंद्रमहासेनो महाबलः ॥ १५ ॥ सामुक्ताऽभ्यहरत्तस्य महिषस्य शिरो मह
त् ॥ पपात भिन्ने शिरसि महिषस्य कर्तुं वितः ॥ १६ ॥ पतता शिरसा तेन द्वारं षोडशयोजनं ॥ पर्वताभिनपि हितं तदा गम्यंतो भवत् ॥ १७ ॥ उत्तराः कुरवस्ते न ग
च्छंत्यद्यथा सुखं ॥ क्षिप्ता क्षिप्ता तु सा शक्तिर्हत्वा शत्रून् सहस्रशः ॥ १८ ॥ स्कंदहस्तमनुप्राप्ता हृत्ते देवदानवैः ॥ प्रायः शरैर्विनिहता महासेनेन यीमता ॥ १९ ॥
शेषा दैत्यगणा घोराभीता खस्ता दुरासदैः ॥ स्कंदपारिषदैर्हत्वा भाक्षिताश्च सहस्रशः ॥ २० ॥ दानवान् भक्षयंतस्ते प्रपिबंतश्च शोणितं ॥ क्षणान्निदानं सर्वम
कार्षुर्भृशहर्षिताः ॥ २१ ॥ तमांसीव यथा सूर्यो वृक्षान् भिर्घनान् खगः ॥ तथा स्कंदो जयच्छत्रन्स्वेन वीर्येण कीर्त्तिमान् ॥ २२ ॥ संपूज्यमानं खिदशैरभिवाद्य मह
ेश्वरं ॥ श्रुशुभे कृत्तिकापुत्रः प्रकीर्णं शूरिवांशुमान् ॥ २३ ॥ नष्टशत्रुर्यदा स्कंदः प्रयातस्तु महेश्वरं ॥ तदा ब्रवीन्महासेनं परिष्वज्य पुरंदरः ॥ २४ ॥ ब्रह्मदत्तवरः स्कंदत्वं
यायं महिषो हतः ॥ देवास्तृणसमायस्य बभूवुर्जयतां वरं ॥ २५ ॥ सोयं त्वयामहाबाहो शमितो देवकंठकः ॥ शतं महिषतुल्यानां दानवानां त्वयारणे ॥ २६ ॥ निहतं देव
शत्रूणां यैर्वयं पूर्वतापिताः ॥ तावैर्कैर्भक्षिताश्चान्ये दानवाः शतसंघशः ॥ २७ ॥ अजेयस्त्वरणेऽरीणामुमापतिरिव प्रभुः ॥ एतत्ते प्रथमं देवस्यातं कर्म भविष्यति ॥
॥ २८ ॥ त्रिषु लोकेषु कीर्त्तिश्च तवाक्षय्या भविष्यति ॥ वशगाश्च भविष्यंति सुरास्तव महाभुज ॥ २९ ॥ महासेनमेव मुक्त्वा निवृत्तः सहै देवतैः ॥ अनुज्ञातो भगवता त्र्यं
बकेण शचीपतिः ॥ ३० ॥ गतो भद्रवटं रुद्रो निवृत्ताश्च दिवौकसः ॥ उक्ताश्च देवारुद्रेण स्कंदं पश्यतमा मिव ॥ ३१ ॥ सहत्वा दानवगणान् पूज्यमानो महर्षिभिः ॥
एकाङ्कवाजयत्सर्वत्रैलोक्यं वक्त्रिंदनः ॥ ३२ ॥ स्कंदस्य यद्दं विप्रः पठेज्जन्म समाहितः ॥ सपुष्टिमिह संप्राप्य स्कंदसालोक्यमाप्नुयात् ॥ ३३ ॥ इति श्री
म० आरण्यके प० मार्कण्डेय समाख्या प० आंगिर० स्कंदोत्पत्तौ महिषासुरवधे एकत्रिंशदधिकद्विंशततमोऽध्यायः ॥ २३१ ॥ ॥ २३२ ॥ ॥ २३३ ॥ ॥ २३४ ॥ ॥ २३५ ॥ ॥ २३६ ॥ ॥ २३७ ॥ ॥ २३८ ॥ ॥ २३९ ॥ ॥ २४० ॥ ॥ २४१ ॥ ॥ २४२ ॥ ॥ २४३ ॥ ॥ २४४ ॥ ॥ २४५ ॥ ॥ २४६ ॥ ॥ २४७ ॥ ॥ २४८ ॥ ॥ २४९ ॥ ॥ २५० ॥ ॥ २५१ ॥ ॥ २५२ ॥ ॥ २५३ ॥ ॥ २५४ ॥ ॥ २५५ ॥ ॥ २५६ ॥ ॥ २५७ ॥ ॥ २५८ ॥ ॥ २५९ ॥ ॥ २६० ॥ ॥ २६१ ॥ ॥ २६२ ॥ ॥ २६३ ॥ ॥ २६४ ॥ ॥ २६५ ॥ ॥ २६६ ॥ ॥ २६७ ॥ ॥ २६८ ॥ ॥ २६९ ॥ ॥ २७० ॥ ॥ २७१ ॥ ॥ २७२ ॥ ॥ २७३ ॥ ॥ २७४ ॥ ॥ २७५ ॥ ॥ २७६ ॥ ॥ २७७ ॥ ॥ २७८ ॥ ॥ २७९ ॥ ॥ २८० ॥ ॥ २८१ ॥ ॥ २८२ ॥ ॥ २८३ ॥ ॥ २८४ ॥ ॥ २८५ ॥ ॥ २८६ ॥ ॥ २८७ ॥ ॥ २८८ ॥ ॥ २८९ ॥ ॥ २९० ॥ ॥ २९१ ॥ ॥ २९२ ॥ ॥ २९३ ॥ ॥ २९४ ॥ ॥ २९५ ॥ ॥ २९६ ॥ ॥ २९७ ॥ ॥ २९८ ॥ ॥ २९९ ॥ ॥ ३०० ॥

इत्यारण्यके ० नै० भा० एकत्रिंशदधिकद्विंशततमोऽध्यायः ॥ २३१ ॥ ॥ २३२ ॥ ॥ २३३ ॥ ॥ २३४ ॥ ॥ २३५ ॥ ॥ २३६ ॥ ॥ २३७ ॥ ॥ २३८ ॥ ॥ २३९ ॥ ॥ २४० ॥ ॥ २४१ ॥ ॥ २४२ ॥ ॥ २४३ ॥ ॥ २४४ ॥ ॥ २४५ ॥ ॥ २४६ ॥ ॥ २४७ ॥ ॥ २४८ ॥ ॥ २४९ ॥ ॥ २५० ॥ ॥ २५१ ॥ ॥ २५२ ॥ ॥ २५३ ॥ ॥ २५४ ॥ ॥ २५५ ॥ ॥ २५६ ॥ ॥ २५७ ॥ ॥ २५८ ॥ ॥ २५९ ॥ ॥ २६० ॥ ॥ २६१ ॥ ॥ २६२ ॥ ॥ २६३ ॥ ॥ २६४ ॥ ॥ २६५ ॥ ॥ २६६ ॥ ॥ २६७ ॥ ॥ २६८ ॥ ॥ २६९ ॥ ॥ २७० ॥ ॥ २७१ ॥ ॥ २७२ ॥ ॥ २७३ ॥ ॥ २७४ ॥ ॥ २७५ ॥ ॥ २७६ ॥ ॥ २७७ ॥ ॥ २७८ ॥ ॥ २७९ ॥ ॥ २८० ॥ ॥ २८१ ॥ ॥ २८२ ॥ ॥ २८३ ॥ ॥ २८४ ॥ ॥ २८५ ॥ ॥ २८६ ॥ ॥ २८७ ॥ ॥ २८८ ॥ ॥ २८९ ॥ ॥ २९० ॥ ॥ २९१ ॥ ॥ २९२ ॥ ॥ २९३ ॥ ॥ २९४ ॥ ॥ २९५ ॥ ॥ २९६ ॥ ॥ २९७ ॥ ॥ २९८ ॥ ॥ २९९ ॥ ॥ ३०० ॥